EXCLUSIVE CALENDARS

CATALOGUE

2023

Jalan® DIARY

Estd. 1969

॥ श्री गणेश जी की आरती ॥

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभः। निर्विघ्न कुरु मे देव, सर्व कार्येषु सर्वदा।।

अर्थः- हे गणेश देवता! आप विशाल रूप तथा सूर्य के समान चमकने वाले है। आप से आशा और माँग है कि हमेशा हमारे सभी कार्यो में कोई बाधा न हो।

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।। जय गणेश...
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ।। जय गणेश...
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।। जय गणेश...
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ।। जय गणेश...
दीनन की लाजराखो शम्भु-सुत वारी। कामना को पूरा करो जग बलिहारी ।। जय गणेश...

गजानंन भूत गणादि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणं। उमासूतं शोक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजं।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओउम् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता ।। ओउम्
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता। सूर्य–चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ओउम्
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख–सम्पत्ति दाता। जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धि धन पाता ।। ओउम्
तुम पाताल–निवासिनी, तुम ही शुभदाता। कर्म–प्रभाव–प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ।। ओउम्
जिस घर तुम रहती, सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।। ओउम्
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान–पान को वैभव, सब तुमसे आता ।। ओउम्
शुभ–गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि–जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।। ओउम्
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। ओउम्

-: श्री लक्ष्मी वन्दना :-

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओउम् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता ।। ओउम्
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता। सूर्य–चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ओउम्
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख–सम्पत्ति दाता। जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धि धन पाता ।। ओउम्
तुम पाताल–निवासिनी, तुम ही शुभदाता। कर्म–प्रभाव–प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ।। ओउम्
जिस घर तुम रहती, सब सद्‌गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।। ओउम्
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान–पान को वैभव, सब तुमसे आता ।। ओउम्
शुभ–गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि–जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।। ओउम्
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। ओउम्

-: श्री लक्ष्मी वन्दना :-

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो अम्बे दुखहरनी।।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी।।
शशि लिलाट मुख महाविशाला।
नेत्र लाल भृकुटी विकराला।।
रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरश करत जन अति सुख पावे।।
तुम संसार शक्ति लय कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना।।
अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला।।
प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी।।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावे।।
रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड कर खम्बा।।

रक्षा करि प्रहलाद बचायो।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो।।
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं।।
क्षीरसिंधु में करत विलासा।
दयासिंधु दीजे मन आसा।।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित न जात बखानी।।
मातंगी धूमावती माता।
भुवनेश्वरि बगला सुख दाता।।
श्री भैरव तारा जग तारिणी।
क्षिन्न भालभव दुःख निवारिणी।।
केहरी वाहन् सोह भवानी।
लंगुर बीर चलत अगवानी।।
कर में खप्पर खड्ग विराजे।
जाको देख काल डर भाजे।।
सोहे अस्त्र और त्रिशुला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला।।
नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहूँ लोक में डंका बाजत।।

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्त बीज शंखन संहारे।।
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी।।
रूप कराल काली को धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा।।
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भई सहाय मातु तुम तब तब।।
अमर पूरी औरों सब लोका।
तब महिमा सब रहे अशोका।।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नरनारी।।
प्रेम भक्ति से जो जस गावे।
दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे।।
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म मरण ताको छुटि जाई।।
जोगी सुर-मुनि कहत पुकारी।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी।।
शंकर आचारज तप कीनो।
काम और क्रोध जीति सब लीनो।।

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहु काल नहि सुमिरो तुमको।।
शक्ति रूप को मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो।।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदंब भवानी।।
भई प्रसन्न आदि जगदंबा।
दई शक्ति नहीं कीन बिलंबा।।
मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।।
आशा तृष्णा निपट सतावे।
रिपु मूरख मोहि अति डरपावे
शत्रु नाश कीजे महारानी।
सुमिरौ इकचित तुम्हें भवानी।।
करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला।।
जब लगि जियौं दयाफल पाऊँ।
तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ।।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावें।
सब सुख भोग परम पद पावें।।

देवी दास शरण निज जानी। करहु कृपा जगदंबा भवानी।।

श्री महामृत्युन्जय मन्त्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

भावार्थ : हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जावे। जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएं और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जावें।

मंत्र लाभ :- यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि)। यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है। इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना। यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।

MAHA-MRITYUNJAYA MANTRA

Om Tryambakam Yajamahe Sugandhim Pushti Vardhanam,
Urvaarukamiva Bandhanaat Mrityormuksheeya Maamritat.

MEANING :- We worship the three-eyed One (Lord Shiva) Who is fragrant and who nourishes well all beings, may he liberate us from death for the sake of immortality even as the cucumber is severed from its bondage (to the creeper).

BENEFITS :- This Maha Mrityunjay Mantra is a life giving Mantra. In these days, when life is very complex and accidents are everyday affairs, this Mantra wards off death by snakebite, lightening, motor accidents, air-accidents and accidents of all descriptions. Besides, it has a great curative effect. Again, diseases pronounced incurable by doctors are cured by this Mantra, when chanted with sincerity, faith and devotion. It is a weapon against diseases. It is a Mantra to conquer death.

505

श्री महामृत्युञ्जय मन्त्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

भावार्थ : हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाये। जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म-मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएं और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जायें।

अघोरेभ्यो, अथघोरेभ्यो, घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वतः शर्वसर्वेभ्यो। नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।
मृत्युंजय, त्र्यंबक, सदाशिव नमस्ते।

मंत्र लाभ : यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि)। यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है। इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना। यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।

मेरे श्याम की प्रतिज्ञा

मेरे मार्ग पर पैर रखकर तो देख,
तेरे सब मार्ग न खोल दूँ तो कहना।

मेरे लिऐ खर्च करके तो देख,
कुबेर के भंडार न खोल दूँ तो कहना।

मेरे लिऐ कड़वे वचन सुनकर तो देख,
कृपा न बरसे तो कहना।

मेरे मार्ग पर निकल कर तो देख,
तुझे शान्ति दूत न बना दूँ तो कहना।

तू मेरा बनकर तो देख,
हर एक की तेरा न बना दूँ तो कहना।

स्वयं को न्योछावर करके तो देख,
तुझे मशहूर न करा दूँ तो कहना।

मेरे लिये कुछ बनकर तो देख,
तुझे कीमती न बना दूँ तो कहना।

मेरी बातें लोगों से करके तो देख,
तुझे मूल्यवान न बना दूँ तो कहना।

मेरे चरित्रों का मनन करके तो देख,
ज्ञान के मोती तुझमें न भर दूँ तो कहना।

मेरी तरफ आकर तो देख,
तेरा ध्यान न रखूँ तो कहना।

मेरा कीर्तन करके तो देख,
जगत का विस्मरण न करा दूँ तो कहना।

मेरे लिये आँसू बहाकर तो देख,
तेरे जीवन में आनन्द के सागर ना भर दूँ तो कहना।

मुझे अपना मददगार बनाकर तो देख, तुझे सबकी गुलामी से न छुड़ा दूँ तो कहना। जय श्री कृष्ण

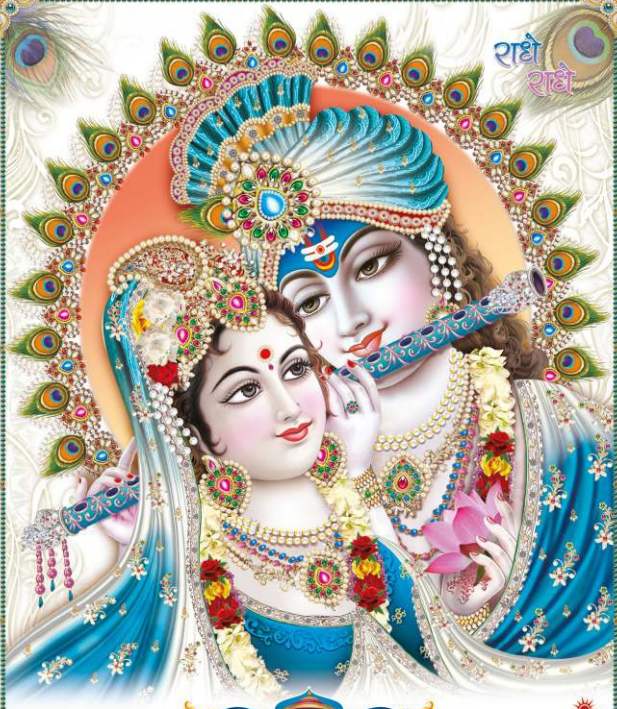

आरती ओ३म् जय जगदीश हरे

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे। भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।।ओ३म्।।
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का। प्रभु। सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।।ओ३म्।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी। प्रभु। तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ।।ओ३म्।।
तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। प्रभु। पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।।ओ३म्।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन–कर्ता। प्रभु। मैं मूर्ख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।।ओ३म्।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। प्रभु। कि बिधि मिलूं दयामय! तुमको मैं कुमति ।।ओ३म्।।
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे। प्रभु। अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।।ओ३म्।।
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। प्रभु। श्रद्धा–भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।।ओ३म्।।
तन मन धन सब कुछ है तेरा। प्रभु। तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ।।ओ३म्।।
ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे। भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।।ओ३म्।।

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्री रामचन्द कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नवकंजलोचन, कंज–मुख कर–कंज पद–कंजारूणम्।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील–नीरज–सुंदरम्। पटपीत मानहूं तड़ित रूचि शुचि, नौमि जनक सुता–वरम्।।
भजु दीनबंधु, दिनेश दानव – दैत्यवंश – निकंदनम्। रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ – नंदनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदार अंगविभूषणम्। आजानुभुज शर – चाप – धर, संग्राम – जित – खर–दूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर – शेष – मुनि – मन – रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल–दल–गंजनम्।।
मन जाहि राचेउ मिलिहि सो वर सहज सुंदर सांवरो। करूनानिधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भंति गौरि आशीष सुनि सिय सहित हियरू हर्षित अली। तुलसी भवानिहिं पूजि पुनिपुनि मुदित मन मंदिर चली।।
जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाई कहि। मुंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे।।

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारूणम्। नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारूणम्।
कंदर्प अगणित अमित छवि, नव नील नीरज सुन्दरम्। पटपीत मानहुँ तड़ित रूचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम्। रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चंद दशरथ नंदनम्।
शिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदारू अंग विभूषणम्। आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम्।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरू कामादि खलदल गंजनम्।
मनु जाहि राचेउ मिलहि सो वरू सहज सुन्दर सावंरो। करूणा निधान सुजान शील, सनेहु जानत रावरो।
एहि भांति गौरी असीस सुन सिय सहित हिय हरषि अली। तुलसी भवानिहि पूजी पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।
जानि गौरी अनुकुल सिय हिय, हरषी न जाई कहि। मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे।

श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।। बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार। बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरीनन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसीया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्मरूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र जी के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सकै कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरो भजन राम को भावै। जनम जनम के दुःख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

(दोहा) पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم
دوکان ومکان کی خیر و برکت کیلئے
آیۃ الکرسی
قُل
قُل
قُل
قُل
512

DEAR CUSTOMERS

It gives us immense pleasure to continue making
new range of Crystal Diamond Calendars
Jumbo Calendars, Magical Calendars
UV Glitter Wall Calendars, Table Calendars,
Office Date Calendars etc.
When you're aiming for Success, you need
reliable Partners.
You have a partner whose passion
and performance have been driving Printing forward
for over 32 years.
You can benefit from a unique range of products and services
consistently focused on one Single goal-customer satisfaction.

Wishing you happy & prosperous
new year

2023